International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 374-375

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 374-375
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-07-2020
Accepted: 20-08-2020

अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

मेघदूत में प्रकृति वर्णन

अनुज कुमार

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास प्रकृति के अनन्य उपासक थे। प्रकृति के प्रति उनका सहज आकर्षण था। उन्होने अपनी काव्य में प्रकृति को एक पात्र के रूप में प्रदर्शित किया है। जैसे मानो की वह अभी बोल उठेंगी। उनकी रचनाओं में प्राकृतिक सौन्दर्य के बड़े सुकुमार चित्र मिलते हैं उनके विशद प्रकृति वर्णन से हमारी कल्पना चक्षु के समक्ष सजीव चित्र नृत्य करने लगते है। प्रकृति के वाह्य दृश्य के रूप योजनात्मक एवं प्रश्लिष्ट चित्रण से उनके प्रकृति से प्रेम का परिचय प्राप्त होता है। इनकी प्रकृति वर्णन में सहृदयता सजीवता, कमनीयता की नवीनता उपलब्ध होती है। कालिदास ने प्रधान रूप से प्रकृति में भव्य मनोरम एवं सौन्दर्य समुज्ज्वल पक्ष का उद्घाटन किया है। मानव एवं प्रकृति दोनों का ही मञ्जुल सम्पर्क तथा अद्भुत एकरसता प्रदर्शित करके महाकवि ने प्रकृति के अन्दर प्रस्फुटित होने वाले हृदय को पहचाना है।

मेघदूत में प्रकृतिचित्रण मेघदूत विशेषकर पूर्वमेघ प्रकृतिचित्रण से भरा पड़ा है। भावविह्वल यक्ष धूम, ज्योति, सलिल और मरुत् के सन्निपात – मेघ के द्वारा संदेश भेजने के लिए तत्पर हो जाता है। 'मेघ' तो स्वयं प्रकृति का ही अङ्ग है। यक्ष मेघ को अलका के मार्ग का वर्णन करता है। मार्ग प्राकृतिक है। पूर्वमेघ में पर्वत, नदी, गुफा, वायु, वृक्ष, लता, पुष्प, चातक, बलाका, हंस, मयूर, शरभ, इन्द्र धनुष, अरण्य आदि प्राकृत विषयों का मनोरम वर्णन प्राप्त होता है।

आम्रकूट पर्वत की चोटी पर जब मेघ पहुँचता है तो आम्रकूट की शोभा कैसी होगी ? यक्ष मेघ से कहता है कि यह आम्रकूट पर्वत जंगली आम के वृक्षों से ढका हुआ है। वृक्षों के पके पीले आम शोभा दे रहे हैं। अब जब बालों की चिकनी चोटी के समान श्यामवर्ण मेघ ! तुम आम्रकूट के शिखर पर चढ़ जाओगे तो यह पर्वत, जो कि सर्वत्र पीतवर्ण किन्तु शिखर पर तुम्हारे कारण काला है, ऊपर से देवदम्पतियों को ऐसा सुन्दर लगेगा जैसे पृथ्वी का स्तन हो। (स्तन सर्वत्र गौरवर्ण होता है किन्तु बीच का उभरा माग काला होता है।)

"छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै-
स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां
मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः॥ [1]

रामगिरि की चोटी पर चिपका हुआ मेघ कैसा सुन्दर लगता है ? जैसे वप्रक्रीडा में निरत कोई हाथी हो कहीं वायु धीरे - धीरे बह रही है, मतवाला चातक मधुर स्वर में बोल रहा है और गर्भाधान का समय वर्षाऋतु - समझकर बलाकायें आनन्द मना रही हैं। कैलास की यात्रा करने वाले राजहंस कमलनाल के टुकड़ों को पाथेयरूप में लिये उड़े जा रहे हैं, रत्नों की शोभा के मिश्रण के समान सुन्दर इन्द्रधनुष उदित हो रहा है, पहली जलवृष्टि के कारण जुती हुई माल भूमि सुगन्ध विखेर रही है, विन्ध्य की ऊँची - नीची तलहटी में बिखर नर्मदा हाथी के शरीर पर की गई चित्रकारी के समान शोभा दे रही है। हरित - कपिश नीप के पुष्पों के केसर, अभी आधे ही उग पाये हैं और दल दलों में लगी कन्दलियों में पहली - पहली कलियाँ खिल गई हैं ; सारङ्ग पृथ्वी की सोंधी गन्ध सूंघ रहे हैं, जल - विन्दुओं को गोंचने में दक्ष चातक दिखाई दे रहे हैं, अर्जुन वृक्षों से पर्वत सुगन्धित हो गये हैं, मेघ को देखकर उत्कण्ठित डबडबाई आँखों वाले मोर बोल रहे हैं। केतकी के अर्धविकसित पीले पुष्प दिखाई दे रहे हैं, बलिभोजी पक्षी घोंसले बना रहे हैं, मतवाले

बोल रहे हैं, " कमलों की सुगन्ध फैल रही है, घर के छज्जे पर कबूतर सोये हुये हैं, सरिता में मछलियाँ उछल रही हैं, ' हाथी सूंडों से सुगन्धित वायु पी रहे हैं,, शरभ छलाँग मार रहे हैं, वायु के टकराने के कारण बाँसों से मधुर ध्वनि आ रही है, इत्यादि।

कालिदास ब्राह्यप्रकृति के चित्रण में ही कृतकार्य नहीं होते, उनका अन्तः प्रकृति का चित्रण भी अनूठा है, बेजोड़ है। कालिदास की प्रकृति चेतन है, उसका हृदय भी मानव जैसा ही है।

कालिदास की प्रकृति उपकार करती है और उपकार को मानती है। कालिदास के मेघ का उपकार देखिये। आम्रकूट पर्वत के वनों में लगी आग को वह मूसलाधार वर्षा द्वारा बुझा देता है। आम्रकूट भी कृतज्ञ है। वह थके हारे मेघ को अपने सिर पर ले लेता है। मित्रता जो ठहरी। तुच्छ व्यक्ति भी उपकार को मानता है फिर भला आम्रकूट पर्वत क्यों न उपकार मानेगा जो इतना उच्च है, महान् है-

'त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ना
वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रेभवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥ [2]

कालिदास की प्रकृति में भी कोमल भाव - प्रेमतत्त्व का साम्राज्य है। बलाकायें रतिकाल को समझकर मेघ का स्वागत करती हैं ; मेघ अपने मित्र ' रामगिरि ' से बिदाई लेता है ; रामगिरि भी मेघ के वियोग में रोता है ; वेत्रवती नदी अपनी तरंगरूपी भौहों को तान लेती है और उसका प्रेमी मेघ उसके मुख का (अधर का) पान करता है। प्रेमिका के तुल्य निर्विन्ध्या नदी अपने शृङ्गार तथा हावभाव द्वारा रतिहेतु मेघ को आमंत्रित करती है, फिर क्यों न मेघ उसका रस ले

'वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणिकाञ्चीगुणायाः
संसर्पन्त्याः स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभः।
निर्विन्ध्यायाः पथि भव रसाभ्यन्तरः सन्निपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ [3]

(हे मेघ !) मार्ग में लहरों की हिलोर से वाचाल पक्षियों की पंक्तिरूप करधनी की लड़ावली, (लड़ - पंक्ति) लड़खड़ाने के कारण मनोहर ढंग से बहती हुई तथा भँवररूपी नाभि को दिखलाने वाली निर्विन्ध्या से मिलकर अन्दर रस से युक्त हो जाना (उसके रस का पान करना)। क्योंकि स्त्रियों का प्रिय के प्रति विलास प्रारंभिक प्रार्थनावाक्य होता है।

यक्ष की विरह - व्यथा पर वनदेवियों को तरस आया है। यक्ष जब स्वप्न में अपनी प्रियतमा को देखकर प्रगाढ़ आलिङ्गन के लिए ऊपर बाहें फैलाता है तब वनदेवियाँ वृक्ष के किसलयों पर मोती जैसे बड़े - बड़े अश्रुबिन्दु टपका देती हैं

'मामाकाशप्रणिहितभुजं निर्दयाश्लेषहेतो
लब्धायास्ते कथमपि मया स्वप्नसंदर्शनेषु।
पश्यन्तीनां न खलु बहुशो न स्थलीदेवतानां
मुक्तास्थूलास्तरुकिसलयेष्वभुलेशाः पतन्ति॥ [4]

निर्विन्ध्या नदी मेघ के वियोग में कृश हो गई है। जल की पतली धारा विरहावस्था को सूचित करने वाली उसकी चोटी है। तटवर्ती वृक्षों से गिरे पीले पत्तों के कारण वह पीली हो गई है, जैसे मेघ के विरह के कारण ही पीली हो गई हो। कितना सौभाग्यशाली है मेघ जिसके विरह में उसकी प्रियतमा की ऐसी स्थिति है। प्रियतमा का ऐसा अनन्य प्रेम किसी सौभाग्य शाली को ही मिलता है। यक्ष कहता है कि मेघ ! कुछ ऐसा उपाय करना जिससे उसकी दुर्बलता दूर हो जाये

'वेणीभूतप्रतनुसलिला तामतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभग ! विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः॥ [5]

पादटिप्पणी

1. पूर्वमेघः-18
2. पूर्वमेघ 17
3. पूर्वमेघ -29
4. उत्तरमेघ 43
5. पूर्वमेघ 30